मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2021 marumegh
ISSN:2456-2904

सरसों के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबन्धन

प्रदीप कुमार पटेल[1], समीर कुमार सिंह[2]*, विजय कुमार[1] एवं विष्णु ओमर[1]

[1]शोध छात्र, [2]सहायक प्राध्यापक,
कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या–224229 (उ०प्र०), भारत
*ई मेलः–skbhu1991@gmail.com

परिचय

सरसों एकवर्षीय पौधा है जिसका वैज्ञानिक नाम *ब्रेसिका कैम्पेस्ट्रिस* एवं पौधे की ऊंचाई 1 से 3 फीट तक होती है, जिसके फूल पीले रंग के होतेहैं। सरसों के तेल में चरपराहट माईरोनसिनेज और सिनिग्रिन के कारण होती है। उप जाति के आधार पर इसके बीज काले अथवा पीले रंग के होते हैं। इसकी उपज के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। सामान्यतः यह नवम्बर–दिसंबर में बोई जाती है तथा मार्च–अप्रैल में इसकी कटाई होती है। भारत में इसकी खेती मुख्यतः पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और गुजरात में अधिक होती है। सरसों की फसल में मुख्यतः माहूँ, आरा मक्खी, चितकबरा कीट (पेंटेड बग) एवं बिहार बालदार सूंडी आदि कीट हानि पहुंचाते हैं। जिससे फसल की उपज में काफी गिरावट होती है।इस पर लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन निम्न प्रकार है–

1. माहूँ या चेंपा :

सरसों की माहूँ पंखहीन या पंखयुक्त हल्के स्लेटी या हरे रंग के 1.5 से 3.0 मिमी. लम्बे चूभने एवं चूसने मुखांग वाले छोटे कीट होते है। इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ पौधों के कोमल भागों जैसे तनों, पत्तियों, फूलों एवं नई विकसित हो रही फलियों से रस चूस कर उसे कमजोर करते ही हैं तथा साथ–साथ रस चूसते समय पत्तियों पर मधुस्त्राव भी करते हैं। इस मधुस्त्राव पर काले कवक का प्रकोप हो जाता है जिससे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया बाधित हो जाती है इस कीट का प्रकोप दिसंबर–जनवरी से लेकर मार्च तक बना रहता है।

माहूँ से प्रभावित सरसों के पौधें

प्रबन्धन

1. अगेती एवं समय से बुवाई करने से माँहू के प्रकोप से बचा जा सकता है।
2. कीट प्रतिरोधक प्रजातियोंजैसे RH-7846, RH-7847, RH-9020एवं RWAR-842का चुनाव करना चाहिए।
3. बुवाई से पहले बीजको इमिडाक्लोप्रिड 600 एफ०एस० की 3–5 ग्रा0 प्रति कि0ग्रा0 बीज से उपचारित करें।
4. प्रारम्भ में प्रकोपित शाखाओं को तोड़कर भूमि में दबा देना चाहिए।
5. माँहू के प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करना चाहिए एवं *काक्सिनेल्ला सेप्टमपंक्टाटा* के 1000 वयस्क प्रति 4000 मी0^2 की दर से खेत में 2 बार छोड़े।
6. माँहू से फसल को बचाने के लिए थायामेथोक्सैम 25 प्रतिशत डब्लू०जी०की 100 ग्रा0 या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 की 0.10–0.12 प्रतिशत का प्रति हेक्टेयर छिडकाव करें।

2. आरा मक्खी

इस कीट का प्रकोप फसल की वानस्पतिक वृद्धि के समय होता है। इस कीट के मुखांग काटने एवं कुतरने वाले होते हैं। इस कीट के ग्रब प्रायः सुबह और शाम पौधे को क्षति पहुंचते हैं। यह कीट पंखयुक्त हल्के स्लेटी रंग के 25 से 30 मिमी. लम्बा होते हैं और ग्रब लगभग 2 मिमी. लम्बी, मटमैले रंग की तथा इनका सिर कला होता हैं। इस कीट के ग्रब फसल को हानि पहुंचाते हैं। ग्रब पौधों की पत्तियों को खाते हैं जिससे उन पर छिद्र दिखाई पड़ने लगते हैं। अत्यधिक प्रकोप होने पर फसल का विकास रुक जाता है। इस कीट का प्रकोप मुख्यतः अक्टूबर–नवम्बर माह में होता है।

आरा मक्खी से प्रभावित सरसों के पौधें

प्रबन्धन

1. फसल काटने के बाद अवशेषों को जला देना चाहिए।
2. अधिक प्रकोप वाले क्षेत्रों में देर से बुवाई करनी चाहिए।
3. फसल की अच्छी तरह से निराई करनी चाहिए।
4. सुबह में ग्रब को इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए।
5. प्रकोप वाले क्षेत्रों में बीजदर अधिक रखें।

6. प्रबंधन के लिए अंकुर अवस्था में सिंचाई करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिकांश ग्रब डूबने के प्रभाव से मर जाते हैं एवं भीषण ठण्ड भी कीट प्रकोप को कम करती है।
7. रोकथाम हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. 1 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें तथा आवश्यकता पड़ने पर दोबारा छिड़काव करें।

3. चितकबरा कीट या पेंटेड बग

इस कीट का प्रकोप मुख्यतः फसल परिपक्वता के समय देखा जाता है। यह कीट काले सफेद धब्बों के साथ 4 से 5 मि.मी. लम्बे चूभने एवं चूसने मुखांग वाले कीट होते हैं। इस कीट के शिशुओं का शरीर संतरे के रंग का तथा आँखे लाल होती हैं जबकि प्रौढ़ कीट गहरे काले रंग का तथा शरीर पर लाल और नारंगी रंग के धब्बे पाए जाते हैं। इसके प्रकोप से तेल की गुणवत्ता एवं उत्पादन में कमी होती है। यह कीट मुख्यतः मार्च से अप्रैल माह में दिखाई देते हैं।यह कीट पूरे वर्ष भर सक्रिय रहते हैं। सरसों की फसल काट जाने के बाद यह अन्य फसलों पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

चितकबरा कीट से प्रभावित सरसों के पौधें

प्रबन्धन

1. फसल काटने के बाद अवशेषों को जला देना चाहिए।
2. खेतों से समय–समय पर खरपतवार निकल कर, गुड़ाई करना तथा स्वच्छ खेती को अपनाना चाहिए।
3. फसल बुवाई के 40–45 दिन बाद सिंचाई करना चाहिए।
4. कटी हुई फसल में मड़ाई जल्दी से जल्दी करनी चाहिए।
5. फसल को बचाने के लिए थायामेथोक्सैम 25 प्रतिशत डब्लू०जी०की 100 ग्रा0 या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 की 0.10–0.12 प्रतिशत का प्रति हेक्टेयर छिडकाव करें।

4. बिहारी बालदार सूंडी

इस कीट का सूंडी अवस्था फसलों को हानि पहुँचाती है। इस कीट का सूंडी नारंगी रंग का जिस पर चौड़ी अनुप्रस्थ पट्टी के साथ दोनों छोर गहरे रंग के पर पीले बालों के गुच्छे होते हैं। सूंडी 4–5 सेमी. लम्बी नारंगी भूरे रंग का होती है। इसके शरीर पर बारीक 2–3 मिमी. लम्बे रोम पाए जाते हैं। वयस्क कीट गहरे लालरंग का जिस पर काले धब्बे और उदर लाल रंग का तथा पंख गुलाबी होतें हैं जिन पर कई काले धब्बों पाए जाते हैं। इस कीट का प्रकोप अगेती फसलो पर ज्यादा देखा जाता है।

इस कीट का प्रकोप सितंबर के अंतिम पखवाड़े से मध्य नवंबर तक देखने को पाया जाता है। यह पौधों की पत्तियों के हरे भागों को खा जातें है। जिससे पत्तियाँ सफेद जालनुमा दिखाई देती हैं। अधिक प्रकोप होने पर पूरी फसल नष्ट हो जाती है।

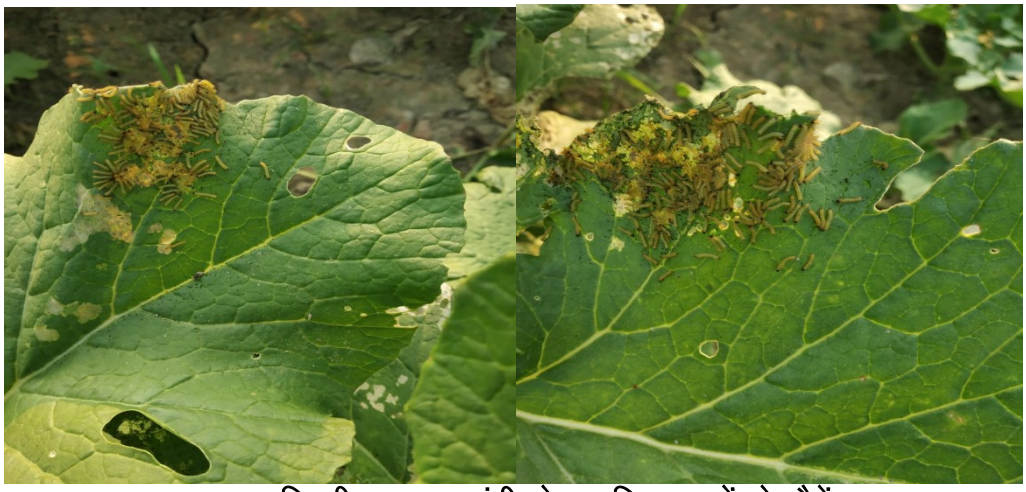

बिहारी बालदार सूंडी से प्रभावित सरसों के पौधें

प्रबन्धन

1. आश्रय देने वाले वैकल्पिक जंगली पौधों और खरपतवारों को हटाना और नष्ट करना।
2. अंडों और नयी सूंडियों को बड़े पैमाने पर इकठ्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए।
3. कैलोट्रोपिस, जटरोफा और पपीते की टहनियों और पत्तियों को खेत के चारों ओर रखें ताकि बड़ी हो चुकी सूंडियाँ फँस जाए उन्हें बाद में नष्ट किया जा सकें।
4. रोकथाम हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. 1 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें तथा आवश्यकता पड़ने पर दोबारा छिड़काव करें।
6. अधिक प्रकोप होने पर इण्डोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत एस०सी०500 मिली0 प्रति हेक्टेयर या फ्लूबेन्डामइड 39.35 प्रतिशत एस०सी० 125 मिली0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करें।